मैं भी चाहता हूँ कि औरतें उचित, शालीन और हयावाला लिबास पहने रहें, न कि अपने सिरों की चोटियों को सोने, मोतियों या क़ीमती चीज़ों के साथ खोले रखें। लेकिन नेक काम औरतों के लिए उचित है अगर वे ख़ुदा की बन्दगी स्वीकार करती हों। **(1 Timothy 2:9-10)**

हिजाब औरत का *आत्मविश्वास* है

हिजाब औरत के अन्दर एक इनसान की हैसियत से आत्मविश्वास पैदा करता है। यह महिलाओं का ध्यान वास्तविकता की और केन्द्रित करके उनके अन्दर आत्म-सम्मान बढ़ाता है।शारीरिक दिखावे के साथ मजबूरी बहुत ही ख़तरनाक और ग़लत नतीजे पैदा कर सकती है, जैसा कि बहुत-सी औरतें समाज की बढ़ती हुई माँगों को पूरा करने में नुक़सान उठा चुकी है। हिजाब दिखावे पर आधारित आत्म-चेतना को सीमित करके आत्म-सम्मान के अभाव के साथ शारीरिक और मानसिक नुकसान को रोकने में मदद करता है।

मैं हिजाब इसलिए नहीं पहनती कि मुझे इसके लिए मजबूर किया जाता है, बल्कि मैं इसे इसलिए पहनती हूँ कि यह मुझे सशक्त करता है।
जोमाना, 23 मेलबोर्न

हिजाब .....

- समाज की तरक्की में रुकावट नहीं है।
- अत्याचार का प्रतीक नही है।
- इसकी वहाँ ज़रुरत नहीं है जहाँ या तो सभी औरतें हों या मर्द क़रीबी रिश्तेदार हों।
- यह औरतों को मर्दों से कमतर नहीं बनाता है।
- यह औरतों को अपनी बात और विचार व्यक्त करने में रुकावट नहीं है।
- यह औरतों को शिक्षा प्राप्त करने या बेहतरीन करियर बनाने में रुकावट नहीं है।
- यह कोई क़ैद नहीं है।
- इसमें गैर-मुस्लिमों के ख़िलाफ़ कोई प्रतिवाद, झगड़ा या बग़ावत नहीं है।
- यह कोई नई चीज़ नहीं है। इतिहास में बहुत-सी पाकबाज़ औरतों ने इसको अपनाया है।
- यह सामुदायिक मूल्यों के भी विपरीत नहीं है - सामुदायिक मूल्य इस बात का ख़याल रखते हैं कि लोगों को इस बात पर न जाँचा जाए कि वे पहनते क्या है, न ही उनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव या दुर्व्यवहार इस बुनियाद पर होना चाहिए कि उनका पहनावा क्या है और वे दिखते कैसे हैं।
- इसको समाज के ख़िलाफ होकर और उससे डरकर नहीं अपनाया जाता है।

क्या कहती हैं *मुसलमान औरतें* *हिजाब* के बारे में।

''मैं हिजाब १७ साल की उम्र से पहन रही हूँ मैं अब इस बात पर नहीं पछताती हूँ कि मैंने इतनी कम उम्र से हिजाब पहनना क्यों शुरु कर दिया था''

- फातेन 27

''हिजाब पहत्रा काफ़ी नही है, बल्कि इसे पहन्ना ख़ुशकिस्मती है।

- मदीना 22

''हिजाब पहन्ना मेरी आज़ादी और मेरी पसन्द का ज़ाहिर करता है न कि उस मजबूरी को जिसे मर्द और मीडिया चाहता है'' **नुसैबह 45**

''मैं हिजाब पहनना पसन्द करती हूँ अल्लाह की खुशी के लिए और मैं हर वक्त उसी के बारे में सोचती रहती हुँ इससे मेरे चेहरे पर खुशी झलकती है''

आइशा, 13

''इससे मेरा लक्ष्य ताजा रहता है कि मुझे जिन्दगी में कुछ बत्रा है और मैं मर्दों की नापाक निगाहों का शिकार बने बगैर आज़ादी के साथ स्कूल जाती हूँ। यह लोगों को इस बात के लिए मजबूर करता है कि वे मुझे मेरे दिखावे से नही बलके मेरे चरित्र से जाँचे'' **मिस फ़लेविया, 22 यू एस ए**

''मेरा शरीर मेरा अपना है, और मुझे किसी को यह सफ़ाई देने की ज़रुरत नहीं है कि क्या पहनती हूँ। यह मेरे मज़हब का हिस्सा है और इसको पहन्ने से मैं किसी इनसान से कम नहीं हो जाती'' **यासमीन 21 आर्स्टेलिया**

सारांश

हिजाब एक मुस्लिम औरत का उसके मालिक के प्रती फ़रमाँबरदारी का अमल है। यह महिला सशक्तिकरण **(Empowerment)** और गरिमा का स्रोत है और पूरी दुनीया की अधिक संख्या में औरतें हिजाब पहनती हैं क्योंकि यह उनका ईमान है। हिजाब में किसी दबाव नहीं है बल्कि यह आज़दी और पाकीज़गी का अमल है और सबसे बढ़कर यह है कि यह ईमान का हिस्सा है। नारी-सम्मान इस्लामी शिक्षाओं का महत्वपुर्ण पहलू है और हिजाब के ज़रिए ये प्रकटित होता है।

औरतों को सच्ची बराबरी वहीं मिल सकती है जहाँ उन्हें अपने शरीर को दिखाने की ज़रुरत न पड़े बल्कि वे अपने शरीर को ढक कर अपने बारे में खुद फ़ैसलाकर सके।

हमसे सम्पर्क करें
इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

हिजाब

ईश्वर के समक्ष समर्पण
शर्म व हया मान-मर्यादा

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000
040 - 6832 7832
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

हिजाब क्या है ?

मुस्लिम मर्दों को भी शर्म-हया और अपनी मान-मर्यादा के लिए ढीले-ढाले और शरीर को छिपानेवाले कपडे पहनने की आवश्यकता है ।

हिजाब शब्द अरबी के , ह ज ब, से बना है। जिसका मतलब होता है छिपाना या ढकना। इस्लाम में हिजाब उस पहनावे को कहते हैं जिसे मुस्लिम महिलाएँ बालिग़ (व्यस्क) होने के बाद पहनती हैं । हिजाब का मतलब है अपने हाथों और चेहरे को छोड़कर पूरे शरीर को ढाँक लेना या परदे में कर लेना । कुछ औरतें अपने हाथों और चेहरों को भी ढकना पसन्द करती हैं, इसे बुरका या निक़ाब कहते हैं । औरतों के बीच या जहाँ सिर्फ़ अपने कुछ क़रीबी मर्द रिश्तेदार ही मौजूद हों, वहाँ हिजाब करने की ज़रूरत नहीं होती। इसके अलावा, हिजाब सिर्फ़ बाहरी दिखावट का नाम नहीं है: बल्कि अच्छी बातचीत, शर्म व हया उच्च व्यवहार भी हिजाब में शामिल हैं । ऐसे ही अच्छे आचरण की अपेक्षा मर्दों से भी की जाती है।

फ़रमाँबरदारी और आज्ञापालन का नाम हिजाब है

यूँ तो हिजाब के बहुत-से फ़ायदे हैं, लेकिन इनमें सबसे अहम खुदा का हुक्म है। इसीलिए, हिजाब पहन्ना अपने सृष्टा का आज्ञापालन है। कुरआन में है:

> ऐ नबी, ईमानवाली औरतों से कह दो.....अपने सीनों (वक्षस्थलों) पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें । - कुरआन 24 : 31

हिजाब पहनने का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि औरतें मर्दों से कमतर होती हैं।

सर्वज्ञ अल्लाह जानता है कि उसके बन्दों के लिए कौनसी चीज़ सबसे बेहतर है । इसीलिए उसने मानवता की भलाई के लिए अपना मार्गदर्शन उतारा । अपने सृष्टा का आज्ञापालन करते हुए, जिस तरह हम दूसरे काम करते हैं, उसी तरह हिजाब को पहनकर इनसान अपने खुदा के क़रीब हो जाता है और इससे पहन्नें वालों को एक दिली इत्मिनान और सन्तोष प्राप्त होता है।

हिजाब औरत की शराफ़त है

इस्लाम समाज में शराफ़त और सभ्यता को बढ़ावा देता है और अनैतिकता को ख़त्म करता है। हिजाब इस मक़सद को हासिल करने में सहायता करता है।

> ईमानवाले पुरषों से कहो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें, यह उनके लिए ज्यादा पाकीजा तरीका है, जो कुछ वे करते हैं अल्लाह को उसकी ख़बर रहती है ।
> और ऐ नबी,ईमानवाली औरतों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें, और बनाव-श्रृंगार न दिखाएँ सिवाय उसके जो खुद ही ज़ाहिर हो जाए, और अपने सीनों (वक्षस्थलों) पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें .....। कुरआन, 24 : 30-31)

ऊपर की वाक्यों में ध्यान देने की बात यह है कि पहले मर्दों को अपनी नज़रें नीची रखने और अपने गुप्तांगों की रक्षा करने का हुक्म दिया गया है इससे इस बात का पता चलता है कि हिजाब और शर्म व हया की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ औरतों के ही कन्धों पर नहीं डाली गई है ।

व्यवहारिक धर्म होने के नाते,एक तरफ़ तो इस्लाम अश्लील पहनावे और यौनाचरण को सार्वजनिक करने पर रोक लगाता है । दूसरी तरफ़, पति- पत्नी के बीच अन्दरोनी प्यार मुहब्बत और नज़दीकी को बढ़ावा देता है ।

हिजाब औरत का सुरक्षा कवच है

हिजाब के पीछे जो हिकमत छिपी हुई है, वह है मर्दों और औरतों दोनों को,जहाँ तक सम्भव हो सके, यौन दुराचार और समाज में उनको नैतिक पतन से बचाए रखना । हिजाब कई तरह से परिवार और समाज को स्थायित्व प्रदान करता है जिससे मर्दों,औरतों और समाज सबको फ़ायदा पहुँचता है। जैसे :

- अपनी तरफ़ उठनेवाले ग़लत क़दमों से सुरक्षा करता है ।
- गन्दी और छिछोरी निगाहों से औरतों को बचाता है ।
- औरतों पर होनेवाले यौन हमलों की सम्भावनाओं को कम करने में सहायता करताहै।
- बाहरी दिखावट के कारण औरतों पर होनेवाले यौन शोषण से रक्षा करता है ।
- बुरी ख़ाहिशों और प्रलोभनों में फसंने से बचाए रखता है।

हिजाब नारी का गौरव है

हिजाब नारी के नारीत्व को दबाने के बजाय ऊपर उठाता है, और उसे वही गौरव तथा आत्म-सम्मान प्रदान करता है जिसके लिए वह बनी है । हिजाब औरत को बाहरी दिखावे की कसौटियों पर जाँचे जाने का विरोध करता है। यह औरतों को वह ताक़त देता है कि वे अपने आप को इस क़ाबिल करें कि उनकी गरिमा को जैसे नेकी, ज्ञान और समाज सेवा आदि पर जांचा जाए न कि उपभाग करनेवाले समाज के उन भौतिक मानकों पर जिनमें क़ीमत इस बात पर लगाई जाती है कि वे दिखती कैसी है या वे कमाती कितना हैं।

अल्लाह की नज़र में मर्दों और औरतों को बराबरी पाने के लिए एक जैसा दिखना ज़रुरी नहीं और इसकी छवि उनके अलग-अलग कामों और ज़िम्मेदारियों से झलकती है, जो उन पर डाली गई हैं।

नोबल प्राइज़ विजेता, तवक्कुल करमान जो कि यमन क्रान्ति की जननी हैं, से जब पत्रकारों ने उनके हिजाब के बारे में पूछा और जानना चाहा कि यह तो आपकी शिक्षा और क़ाबिलीयत के मुताबिक नहीं है, तो उन्होंने जवाब दिया-

पूर्व काल में इनसान लगभग नंगा रहता था और जैसे-जैसे उसकी अक़ल बढ़ती गई, उसने कपडे पहन्ने शुर किए । मैं आज कुछ हूँ और जैसे कपड़े पहने हुए हूँ, उससे सभ्यता का सबसे उच्च स्तर दिखाई पड़ता है जो इनसानों में विकसित हुआ है और सभ्यता का यह लेवल पतन का शिकार नहीं है। यह तो कपड़ों का उतार फेंकना है जिससे इनसान फिर प्राचीन काल की तरफ़ जाता दिखाई पड़ता है जो इनसानें में विकसित हुआ है और सभ्यता का यह लेवल पतन का शिकार नही हैं ।

हिजाब औरत का सम्मान है

बहुत-सी जगहों पर आज औरतों को बचपन से यह बात सिखाई जाती है समाज में उनकी क़ीमत उनकी ख़ूबसूरती और कशिश ही से होती है। उन्हें मजबूर किया जाता है कि समाज जो चाहता है, जिस पर समाज में ज्यादा ज़ोर है उसको पूरा करने के लिए उसे सुन्दरता के उन मानकों को मानना चाहिए जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नही होता । इस तरह के माहौल में जहाँ सारा ज़ोर बाहरी दिखावे और ख़ूबसूरती पर ही दिया जाता है, वहाँ औरतों की अन्दरोनी ख़ूबसूरती और उच्छ चरित्र दब कर रह जाता है ।

लैकिन इस्लाम सिखाता है कि औरतों को उनके नेक चरित्र के मुताबिक सम्मान दिया जाना चाहिए न कि उनकी भौतिक और शरीरिक बनावट और बाहरी दिखावे की बिना पर जिस पर उसका कोई बस नहीं होता । औरतों को समाज में पहचान और अपनाइयत पाने के लिए अपने जिस्म और ख़ूबसूरती को इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि हिजाब उनको अपनी क़ीमत उनकी दिखावट से नहीं बल्कि उनकी क़ाबिलियतों जैसे तक्वा (ईश-भय), नेकी, हया और बुध्दिमानी से लगाने की बात करता है जो कि समाज में उतनी ही स्वीकार्य होती हैं । हर औरत जो हिजाब या बुरक़ा पहनती है अपने आप में एक अलग व्यक्तित्व रखती है । और यह बहुत ग़लत बात होगी कि हम ऐसी सारी औरतों पर जो एक समान कपडे पहने हुए दिखाई देती हैं ,सिरे से एक ही जैसी होने का हुक्म लगा दें।

हिजाब बाइबल में

हिजाब कोई नई चीज़ नहीं है । मुस्लिम औरतें हिजाब पहनकर इतिहास की बहुत ही पाकबाज़ औरतों, जैसे हज़रत मरयम, का अनुसरण करती हैं । बाइबिल से मिलनेवाले कुछ उदाहरणों में से दो को यहाँ दिया जाता है ।
और हर वह औरत जो नंगे सिर इबादत या धर्म प्रचार करती है सिर को बेइज़्ज़त करती है । (1 Corinthians 11: 3-6)